# Periodic Test – 1
# Class – 8
# Sanskrit

पुस्तक का नाम – सकलं संस्कृतम् भाग – 8
कक्षा – 8 वीं
प्रथम – पाठ
आदिकवि
लोट लकार और विधिलिङ् का प्रयोग
(हिन्दी अनुवाद)

गुरु – प्रिय छात्रो ! क्या आप सब जानते हैं कि संस्कृत भाषा के प्रथम कवि कौन थे ?
नरेश – हाँ ! श्रीमान् ! महर्षि वाल्मीकि थे।
गुरु – वे एक डाकू थे, ऐसा आप सब जानते हैं अथवा नहीं ?
सुरेश – कवि डाकू क्यों बन गए थे ? इस विषय में हम सब जानना चाहते हैं।
नरेश – आचार्य ! वे डाकू कैसे बने गए थे, और कैसे उनका हृदय परिवर्तित हुआ ? कृपया इस विषय में बताइए, हम सब सुनना चाहते हैं।
गुरु – प्राचीन समय में रत्नाकर नामक एक निर्दयी डाकू था। जंगल में राहगीरों का धन लूटना ही उसकी जीविका का साधन था। जो कोई भी उसका विरोध करता था, रत्नाकर उसके प्राण लेने में भी संकोच नहीं करता था।
नरेश – क्या आदिकवि प्राणघातक थे ?
गुरु – हाँ ! एक बार एक मुनि उस मार्ग से जा रहे थे। तब क्या हुआ, सुनो। तब रत्नाकर उसके सामने आकर इस प्रकार बोला –
रत्नाकर – (जोर से) हे मुनि ! वहीं रुक जाओ ! जो कुछ भी तुम्हारे पास है वो सब कुछ मुझे दे दो।
मुनि – मेरे पास तो कुछ भी नहीं है। केवल एक जलपात्र ही है। परन्तु तुम लूटे हुए धन से क्या करते हो ? यह क्या तुम नहीं जानते हो कि यह पाप कर्म है ?
रत्नाकर – लूटे हुए धन से परिवार के पालन-पोषण का महान् कार्य करता हूँ।
मुनि – तो परिवार के लोग भी तुम्हारे पाप-कर्म में सहभागी होंगे ?
रत्नाकर – अवश्य ही वे भी मेरे पाप में सहभागी होंगे।
मुनि – तब तुम शीघ्र घर जाओ। इसके विषय में उनसे पूछकर आओ।

रत्नाकर - ठीक है, उनसे पूछकर आता हूँ। तबतक रस्सी से इस वृक्ष में तुम्हें बाँधकर जाता हूँ।
(वह मुनि को वृक्ष में बाँधकर घर जाता है। घर में सभी परिवार के सदस्य बैठे हैं)

रत्नाकर - हे मेरे परिवार के लोग! मैं पाप-कर्म करके आपसब का पालन-पोषण करता हूँ। मेरे पाप में आपसब भी सहभागी होंगे?

पिता - पुत्र! हमसब कैसे तुम्हारे पाप कर्म में सहभागी होंगे? व्यक्ति अपने पाप का फल स्वयं भोगता है।

माता - हम सब क्या जानते हैं कि तुम क्या करते हो? अथवा किस प्रकार से धन कमाते हो? पाप से धन कमाओ, ऐसा मैंने आदेश नहीं दिया।

रत्नाकर - मेरे पाप-फल का सहभागी कोई भी व्यक्ति नहीं है। मेरी पत्नी और मेरी संतानें भी इसी प्रकार बोल रहे हैं। हायू! धिक्कार है! तब किसके लिए मैं (धन) लूटने का काम करता हूँ? वह मुनि ठीक ही कह रहा था। मैं कभी भी पाप-कर्म नहीं करूंगा। मुनिवर के पास चलता हूँ।
(पास जाकर खिन्न होकर वह मुनि के चरणों में गिर जाता है)

मुनि - पुत्र! आत्मज्ञान से प्रकाशित तुम इस प्रकार के पाप कर्म कभी भी मत करना। अपने परिवार के लोगों के उत्तर से शोक में डूबा हुआ तुम्हारा हृदय अब (पश्चाताप रूपी) आँसुओं के जल से साफ हो गया है।

रत्नाकर - (हाथों को जोड़कर) मुनिवर! आपने मेरी आँखें खोल दी। अब मैं क्या करूं?

मुनि - तुम सभी प्रकार के पापकर्म (लूटने का काम) को छोड़कर भगवान का स्मरण करो।

गुरु - (इस प्रकार मुनि और रत्नाकर के बीच के वार्तालाप को बताकर) मुनि के उपदेश से 'राम-राम' इसका जाप करते हुए वह डाकू 'महर्षि वाल्मीकि' बन गया। वाल्मीकि ही आदिकवि के नाम से विख्यात हुए।

अभ्यास कार्य
लेखन कार्यम् —

प्रश्न2. कथनों के समक्ष 'सत्य' अथवा 'असत्य' लिखिए—
(क) महर्षि: वाल्मीकि: लौकिक-संस्कृत-साहित्यस्य आदिकवि: अस्ति। — आम्
(ख) स: एक: धनलुण्ठक: आसीत् — आम्
(ग) रत्नाकरस्य जीविकासाधनं धनलुण्ठनं नासीत् — न
(घ) रत्नाकरस्य कार्ये तस्य स्वजना: सहभागिन: न आसन् — आम्
(ङ) वाल्मीकि: एव आदिकवि: अति सुविख्यात:। — आम्

प्रश्न3. निर्देश के अनुसार उत्तर दीजिए—

| पदानि | मूलधातु: | लकार: | वचनम् | पुरुष: |
|---|---|---|---|---|
| जानीयाम | ज्ञा | विधिलिङ् | एकवचनम् | उत्तम: |
| (क) कुर्या: | कृ | ,, | ,, | मध्यम: |
| (ख) भवेम | भू | ,, | बहुवचनम् | उत्तम: |
| (ग) तिष्ठ | स्था | लोट् | एकवचनम् | मध्यम: |
| (घ) कथयतु | कथ् | ,, | ,, | प्रथम: |
| (ङ) आगच्छ | आ+गम् | ,, | ,, | मध्यम: |
| (च) शृणुयु: | श्रु | विधिलिङ् | बहुवचनम् | प्रथम: |
| (छ) स्यु: | अस् | ,, | ,, | ,, |
| (ज) जानासि | ज्ञा | लट् | एकवचनम् | ,, |

प्रश्न4. लकार परिवर्तित कीजिए—

| लट् लकार: | लोट् लकार: | विधिलिङ् लकार: |
|---|---|---|
| कथयति | कथयतु | कथयेत् |
| गच्छसि | आगच्छ | गच्छे: |
| तिष्ठसि | तिष्ठ | तिष्ठे: |
| शृण्वन्ति | शृण्वन्तु | शृणुयु: |
| भवाम: | भवाम | भवेम |

प्रश्न 5. पाठ के आधार पर वाक्य पूरे कीजिए —

(क) - - क्रूरः दस्युः

(ख) - - धन लुण्ठनम्

(ग) - - परिवारस्य पोषणार्थं

(घ) - - पापकर्मणा

(ङ) - - लुण्ठनं

प्रश्न 6. एक वाक्य में उत्तर दीजिए —

(क) वाल्मीकिः कः आसीत् ?

उत्तर - पुरा वाल्मीकिः एकः क्रूरः दस्युः आसीत् ।

(ख) रत्नाकरः किं करोति स्म ?

उत्तर - रत्नाकरः वनान्तरे पथिकानां धनलुण्ठनं कृत्वा जीविकोपार्जनं करोति स्म ।

(ग) मुनिः रत्नाकरं किम् अपृच्छत् ?

उत्तर - मुनिः रत्नाकरम् अपृच्छत् - "हे स्वजनाः ! अहं पापकर्मणा भवतां पोषणं करोमि । मम पापे भवन्तः अपि सहभागिनः स्युः ।"

(घ) स्वपरिवारजनस्य उत्तरं श्रुत्वा रत्नाकरः किम् अचिन्तयत् ?

उत्तर - स्वपरिवारजनस्य उत्तरं श्रुत्वा रत्नाकरः अचिन्तयत् — "हा ! धिक् ! तर्हि किमर्थम् अहं लुण्ठनं कुर्याम् ? सः मुनिः सत्यम् एव अकथयत् । अहं कदापि पापवृत्तिं न करिष्यामि । मुनिवरम् उपगच्छामि ।

(ङ) वाल्मीकिः किं काव्यम् अरचयत् ?

उत्तर - वाल्मीकिः रामायणम् महाकाव्यम् अरचयत् ।

विषय - संस्कृत
कक्षा - 8 वीं
द्वितीय पाठ - आविष्कारा:
(हिन्दी अनुवाद)

1. प्रिया: छात्रा: - - - - - - यन्त्राणां वार्ताम् -
अर्थ - प्रिय छात्रों! यह विज्ञान का युग है। हमारा जीवन विज्ञान से चमत्कृत है। दैनिक जीवन में सुविधा हेतु आविष्कृत वैज्ञानिक यन्त्र मनुष्यों के विकास में सहायक हों - ऐसी कामना है। घर हो या कार्यालय, बाजार हो या उद्योगालय (कारखाना) सभी जगह यन्त्रों (मशीनों) का ही जयघोष सुनाई देता है। इन आविष्कारों से लोग गौरवान्वित होते हैं। अब यन्त्रों (मशीनों) की वार्तालाप सुनिए -

2. अहं विद्युच्छीतकम् - - - - - - उपयोग: ।
अर्थ - मैं फ्रीज हूं। लोगों को हमेशा भोज्यपदार्थ देता हूं। ग्रीष्मकाल में गर्मी से व्याकुल लोगों को मैं ठण्डा पेय प्रस्तुत करता हूं। मैं आधुनिक जीवन शैली में कामकाजी महिलाओं के लिए ठण्डे वटवृक्ष के समान हूं। वे जो कुछ भी मेरे अंदर रखती है उसे कल्पवृक्ष के समान यथासमय उन्हें देता हूं। घर-घर में मेरा उपयोग है।

3. अहं दूरदर्शनम् - - - - - - मम विचार: ।
अर्थ - मैं दूरदर्शन हूं। दैनिकजीवन में लोग मेरा उपयोग सम्पर्कसाधन के रूप में करते हैं। दृश्य - श्रव्य उपकरण के रूप में मैं सबके मन को प्रसन्न करता हूं। थके हुए लोग जब मेरा दर्शन करते हैं तब उनके हृदय में आनंद का ही संचार हो - यही मेरा उद्देश्य है। मैं प्रतिदिन सभी लोगों के लिए ज्ञानवर्धक कार्यक्रम प्रस्तुत करता हूं। जिज्ञासु बालकों के लिए मैं ही दोस्त हूं। सबका ज्ञान बढ़े और सबका मन प्रसन्न हो - ऐसा मेरा विचार है।

4. अहं संगणकयन्त्रम् - - - - - - इति मम संकल्प: ।
अर्थ - मैं कम्प्यूटर हूं। ऊंगलियों के द्वारा संसार का दर्शन वातानुकूलित मैं ही हूं। वैज्ञानिक प्रतिदिन जो कुछ भी खोजते

है, वो सब कुछ मेरे मस्तिष्क (दिमाग) में स्थापित हो जाते हैं। मैं अत्याधुनिक पुस्तकालय और ज्ञान-विज्ञान साहित्य का दृश्य कोश हूँ। सभी लोगों को मैं खोजे हुए विषयों को दिखाता हूँ। बच्चे-बूढ़े सभी मेरे सामने बैठते है और आनंद का अनुभव करते हैं। इन्टरनेट के माध्यम से लोग घर से ही क्रय-विक्रय (खरीदना-बेचना) कर सकते हैं। इसी प्रकार के बहुत सारे कार्य मैं सम्पादित करता हूँ। 'समाज की सेवा और समाज के लिए जीवन' यह मेरा संकल्प है।

5. अहं दूरभाषयन्त्रम — — — — — अभिलषामि।
अर्थ - मैं दूरभाषयन्त्र हूँ। चलितदूरभाषयन्त्र मेरा छोटा रूप है। इस यन्त्र के द्वारा लोग दूर स्थित लोगों के साथ बात-चीत कर सकते हैं। दैनिक जीवन में चलित दूरभाषयन्त्र की बहुत उपयोगिता है। चलित दूरभाष यन्त्र के द्वारा लोग समय देखने में समर्थ हैं। इन्टरनेट भी चलाते है। लोग गीत भी सुनते है, चलचित्र भी देख सकते है। आजकल तो चलित-दूरभाष यन्त्र सामाजिक-सम्पर्क सूत्र के समान प्रचलित है। 'जन सम्पर्क सुविधायुक्त हो' ऐसी मेरी इच्छा है।

6. अहं ध्वनिमापकयन्त्रम — — — — प्रयासं करोमि।
अर्थ - मैं ध्वनिमापकयन्त्र (सोनोग्राफिकयन्त्र) हूँ। मैं रोगियों के लिए उपकारक (सहायक) हूँ। लोगों के शरीर में स्थित जो रोग होते है उनका परीक्षण करना ही मेरा कार्य है। पेट के अंदर जाकर सब कुछ जानकर मैं लोगों को निरोगी करता हूँ। चिकित्सा के क्षेत्र में मेरा बहुत योगदान है। आन्तरिक दोषों को जानकर रोग के निदान में (मैं) सहायक हूँ। मैं सभी के स्वस्थ जीवन की कामना करता हूँ। विशेष किरणों से युक्त मैं स्वास्थ्य की रक्षा के लिए प्रयास करता हूँ।

लेखन कार्यम

प्रश्न2. विशेषण पदों के साथ विशेष्य पदों का मिलान कीजिए —
(क) शीतकर: — वटवृक्ष:
(ख) ज्ञानवर्धकान् — कार्यक्रमान्

(ग) अत्याधुनिकः - पुस्तकालयः
(घ) अनेन - यन्त्रेण
(ङ) आन्तरिकान - दोषान्

प्रश्न 3. मंजूषा से पद चुनकर रिक्तस्थान पूरे कीजिए -
(क) --- उपयोगः
(ख) --- ज्ञानवर्धकान् ---
(ग) --- विषयान् ---
(घ) --- सौकर्यम् ---
(ङ) --- स्वस्थजीवनं ---

प्रश्न 4. वाक्य किसने कहा यह लिखिए -
(क) आधुनिकजीवनशैल्यां ---- ⇒ विद्युद्दीतकम्
(ख) दृश्य-श्रव्योपकरणरूपेण ---- ⇒ दूरदर्शनम्
(ग) अङ्गुलिभिः ---- ⇒ संगणकयन्त्रम्
(घ) जनसंपर्के ---- ⇒ दूरभाषयन्त्रम्
(ङ) विशिष्टैः किरणैः ---- ⇒ ध्वनिमापकयन्त्रम्

प्रश्न 5. एक वाक्य में उत्तर दीजिए -
(क) सर्वत्र केषां जयघोषं शृणुयाम ?
उत्तर - सर्वत्र यन्त्राणाम् जयघोषं शृणुयाम ।

(ख) कः कल्पवृक्षः इव वर्तते ?
उत्तर - विद्युद्दीतकम् कल्पवृक्षः इव वर्तते ।

(ग) जनाः कस्य उपयोगं संपर्कसाधनरूपेण कुर्वन्ति ?
उत्तर - जनाः दूरभाषयन्त्रस्य उपयोगं संपर्कसाधनरूपेण कुर्वन्ति ।

(घ) अत्याधुनिकः पुस्तकालयः कः ?
उत्तर - अत्याधुनिकः पुस्तकालयः संगणकयन्त्रम् अस्ति ।

(ङ) सोनोग्राफिकयन्त्रम् आरोग्याय कथं सहायकम् ?
उत्तर - सोनोग्राफिकयन्त्रम् आरोग्याय आन्तरिकान् दोषान् ज्ञात्वा रोगस्य निराकरणे सहायकः भवति ।

***************